॥ श्रीमत्कुञ्जविहारिणे नमः ॥

॥ श्री स्वामी हरिदासो विजयतेतराम ॥

रसिक अनन्य नृपति श्री स्वामी हरिदास जी महाराज कृत

उज्ज्वल रस के पद्

श्री केलिमाल जी

॥ श्रीमत्कुञ्जविहारिणे नमः ॥

॥ श्री स्वामी हरिदासो विजयतेतराम ॥

“आचारज ललिता सखी, रसिक हमारी छाप। नित्य किशोर उपासना, जुगल मंत्र को जाप॥
नाहीं द्वैताद्वैत हरि, नहीं विशिष्ट द्वैत।   बंधे नहीं मतवाद में, ईश्वर इच्छा द्वैत॥"

सखी की बोलनी

॥ राग कान्हरौ ॥

माई री सहज जोरी प्रगट भई
जु रंग को गौर- स्याम घन-दामिनि जेसें ।
प्रथमहूँ हुती अबहूँ
आगे हूँ रहि हैं न टरि हैं तैसें ।
अंग-अंग की उजराई सुघराई
चतुराई सुंदरता ऐसें ।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यासा कुंजबिहारी
सम वेस बेसें ।।१॥

रुचि के प्रकास परस्पर खेलन लागे।
राग- रागिनी अलौकिक उपजत,
नृत्य संगीत अलग लाग लागे।
राग ही में रंग रह्यौ
रंग के समुद्र में दोउ झागे ।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी
पे रंग रह्यो रस ही में पागे ॥२॥

ऐसे ही देखत रहों
जनस सुफल करि मानों ।
प्यारे की भावती भाँबतीज के प्रात-प्यारे
जुगल- किसोरहि जानों ॥
छिन न टरों पल होंह न इत-उत
रहौं एक तानों।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा
कुंजबिहारी मन रानों ॥३॥

जोरी विचित्र बनाई री माई
काह मन के हरन कों ।
चितवत द्रष्टि टरत नहि इत-उत
मन-बच-कर्म याही संग भरन कों ॥
ज्यों घन-दामिनि संग रहत नित,
बिछुरत नाँहिन और बरन कों।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा
कुंजबिहारी न टरन कों ॥४॥

लाल जु के वचन

॥ राग कान्हरौ ॥

इत उत काहे कों सिधारति मेरी
आँखिन आगे ही तु आव।
प्रीति को हित हों तो तेरो जानों
ऐसो ही राखि सुभाव ।
अमृत से बचन जिय को प्रकृति सों मिल
ऐसोई दे दाव।
श्रीहरिदास के स्वामी -स्यामा कहत री प्यारी
प्रीति को मंगल गाव ॥५॥

लाल जु के वचन

॥ राग कान्हरौ ॥

प्यारीजु, जैसे तेरी आँखिन में हों, अपनपो देखत हों
ऐसें तुम देखति हो किधों नाहि ।
हों तोसों कहाँ प्यारे आँखि मूंदि रहों
तो लाल निकसि कहाँ जाँही ।
मोकों निकसिबे को ठोर बतावो,
साँची कहों बलि जाउं लागों पाहो ।
श्रीहरिदास के स्वामी-स्यामा कुंजबिहारी
तुमहीं देख्यो चाहत और सुख लागत काँही ॥६॥

लाल जु के वचन

॥ राग कान्हरौ ॥

प्यारी तेरो बदन अमृत की पंक
तामें बींधे नेन द्वै ।
चित चल्यो काढन कों
विकुच संधि संपुट में रह्यो भ्वे ॥
बहुत उपाइ आहि री प्यारी
पे न करत स्वे ।
श्रीहरिदास के स्वामीस्यामा कुंजबिहारी
कहत ऐसे ही रहो है ॥७॥

॥ राग कान्हरौ ॥

आवत जात बजावत नूपुर ।
मेरो तेरो न्याव दई के आगें
जो कछु करो सो हमारे सिर ऊपर ॥
निपट निकट मवास ह्वै रही प्यारी
पेंड दूपर ।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी
बिलसो निहचल धूपर ॥८॥

दृष्टि चेप वर फंदा मन पिजरा
राख्यौ ले पंछी बिहारी ।
चुनौं सुभाव प्रेम-जल अंग श्रवत
पीबत न छँ अघात रहे मुख निहारी ॥
प्यारी प्यारी रटत रहत (छिन ही छिन)
याकें और न कछू हिया री।
सुनि हरिदास पंछी नाना रंग देखत ही
देखत प्यारीजु न हारी ॥१॥

भूले भूले हूँ मान न करि री प्यारी
तेरी भोहें मली देखत प्रान न रहत तन ।
ज्यो न्योछावर करों प्यारी तो पर
काहे तें तू सुकी कहत स्याम घन
तोहि ऐसें देखत मोहि,
अब कल केसें होइ जु प्राणधन।
सुनि श्रीहरिदास काहे न कहत
यासों छॉडिव छाँडि गा अपनोंपन ॥१०॥

श्री हरिदास जु के वचन

॥ राग कान्हरौ ॥

बात तौ कहत कहि गई
अब कठिन परी बिहारी ।
प्रान तौ नांहिने तन अस्त-बिस्त भये
कहें कहा प्यारी ॥
भाँवते को प्रकृति देखत जो श्रम भयो
बहुत हिया री ।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंज- बिहारी
बाहु सों बाहु मिलाय रहे मुख निहारी ॥११॥

कुंजबिहारी हों तेरी बलाइ लेऊं
नीके हो गावत।
राग रागिनीन के जथ उपजावत ॥
तेसीये तंसी मिली जोरी
प्रियाजू को मुख देखत चंद लजावत ।
श्रीहरि- दास के स्वामी स्यामा को
नृत्य देखत काहि न भावत ॥१२॥

एक समे एकांत बन में
करत सिंगार परस्पर दोई।
वे उनके वे उनके प्रतिबिबनि देखत
रहत परस्पर भोई ॥
जेसे नीके आजु बने ऐसे कबहूँ न बनें
आरसी सब झूठी परी कैसीयैव कोई ।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी
रीझि परस्पर प्रीति नोई ॥१३॥

राधे चलि री हरि बोलत कोकिला अलापत
सुर देत पंछी राग बन्यो।
जहाँ मोर काछ बांधे नृत्य करत
मेघ मृदंग बजावत बंधान गन्यो ॥
प्रकृति की कोऊ नाँहि यातें सुरति के उनमान
गहि हौं आई में जन्यौ ।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी की
अटपटो बानि ओर कहत कछू और भन्यो ॥१४॥

तेरो मग जोवत लाल बिहारी।
तेरी समाधि अजहूँ नाह छूटत
चाहत नाहिनें नेकु निहारी ॥
ओचक आय द्वै कर सों संदे नन
अरबराय उठी चिहारी।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा
ढूढत बन सें पाई प्रिया दिहारी ॥१५॥

सखी के वचन प्रियाजू सों

॥ राग कान्हरौ ॥

मानि तु अब चलि रो एक संग रह्यो कीजे ।

तो कीजे जो बिन देखे जीजे ॥

ये स्याम घन तुम दामिनी प्रेम

पुंज वरषा रस पीजे ।

श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा

कुंजबिहारी सों हिलिमिलि रंग लीज ॥१६॥

सखी के वचन प्रियाजू सों

॥ राग कान्हरौ ॥

तु रिस छांड़ि री राधे-राधे।
ज्यों-ज्यों तोकों गहरु,
त्यौं-त्यौं सोकों बिथा री साधे-साधे॥
प्रानिनि कौ पोषत हैं री
तेरे बचन सुनियत आधे-आधे ।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा
कुंजबिहारी तेरी प्रीति बाँधें- बाँधे ॥ १७॥

आजु त्रन टूटत है री, ललित त्रिभंगी पर। चरन-चरन
पर मुरली अधर धर,
चितवनि बंक छबीली भुव पर॥
चलहु न बेगि राधिका पिय पे
जो भयो चाहत हो सर्वोपर ।
श्रीहरिदास के स्वामी कौ समयो अब नीको बन्यो
हिलिमिलि केलि अटल रति भई धूपर ॥१८॥

दिन डफ ताल बजावत गावत
भरत परस्पर छिन-छिन होरी ।
अति सुकुमार बदन श्रम वरषत
भले मिले रसिक किसोर-किसोरी ॥
बातनि बतबतात राग रंग रमि रह्यो
इत उत चाह चलत तकि खोरी ।
सुनि श्रीहरिदास तमाल स्याम सों
लता लपटि कंचन की थोरी ॥ १९॥

॥ राग कान्हरौ ॥

द्वैलर मोतिन को एक पुंजा पोति को सादा
नेत्रनि दृष्टि लागौ जिनि मेरी।
हाथनि चारि-चारि चूरी पाइन इकसार
चूरा चोपहलू इकटक रहे हरि हेरी ॥
एक मरगजी सारी तन तें कंचुकी न्यारी
अरु अँचरा की बाँई गति मोरी उरसनि फेरी।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी
या रस हो बस भये हरे-हर सरकनि नेरी ॥२०॥

॥ राग कान्हरौ ॥

जोबन रंग रंगोली सोने से गात,
ढरारे नेना कंठ पोति मखतूली ।
अंग-अंग अनंग झलकत सोहत कानन बीरे,
सोभा देत देखत ही बने जोन्ह् में जोन्ह सी फुली ॥
तनसुख सारो लाही अंगिया अतलस अतरोट,
छबि चारि-चारि चूरी, पहुँचनि पहुंची खमकि बनी,
नकफूल जेब मुख बोरा, चौंका कोंधें संभ्रम भुली
ऐसी नित्यबिहारिनि श्रीबिहारीलाल संग,
अति आधीन आतुर लटपटात ज्यों तरु तमाल
कुंजमहल श्रीहरिदासी जोरी सुरति हिडोर झली ॥२१॥

राधे दुलारी मान तजि।
प्रांन पायो जात है री मेरौ सजि ॥
अपनों हाथ सेरे माथे धरि
अभैदान दे अजि ।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी
कहत री प्यारी रंग रुचि सों बलि लजि
॥२२॥

सखी के वचन

॥ राग कान्हरौ ॥

गुन की बात राधे तेरे आगे को जानें
जो जानें सो कछु उनहारि।
नृत्य गीत ताल भेदनि के विभेद जानें
कहूँ जितेक ते देखे झारि॥
तत्व सुद्ध स्वरूप रेख परमान
जे विज्ञ सुघर ते पचे भारि ।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी नेक तुम्हारी
प्रकृति के अंग-अंग ओर गुनी परे हारि ॥२३॥

सखी के वचन

॥ राग कान्हरौ ॥

सुघर भये हो बिहारी याही छाँह तें ।
जे जे गटी सुघर सुर जानपनें को
ते ते याही बांह तें ॥
हुते तो अधिक बड़े सबहीं तें
पै इनकी कस न खटात याँह तें ।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा
कुंजबिहारी जाक रहे चाह तें ॥२४॥

सखी और लालजू की बोलनी

॥ राग कान्हरौ ॥

राधा रसिक कुंजबिहारी कहत जु हों न कहूं गयौ
सुनि-सुनि राधे तेरी सौं।
मोहि न पत्याहु तो संग हरिदासी हुती
पुछि देखि भटू कहि धों कहा भयो सेरी सौं॥
प्यारी तोहि गठोंधन प्रतीति छाँड़ि छीया
जान दे इतनीब एरी सौं।
गहि लपटाइ रहे छल दोउ
छाती सौं छाती लगाय फेराफेरी सौं ॥२५॥

प्यारी तेरी महिमा बरनी न जाय मौपे
जिहि आलस काम बस कोन ।
ताकौ दंड हमें लागत है री, भये आधीन ॥
साढ़े ग्यारह ज्यों औंटि दूजे नव सत साजि
सहज ही में जवादि कपूर कस्तुरी
कुमकुम के रंग भीन ।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा
कुंजबिहारी रस बस करि लीन ॥२६॥

सखी के वचन

॥ राग कान्हरौ ॥

श्रम जलकन नांही होत, मोती माला कौं देहु ।
देखे बहुत अमोल मोल नाँही
तन-मन-धन न्योछावरि लेहु ॥
रति विपरीत प्रीति को आलस
तेरे सधि नाइक एहु ।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी
प्रीति वर मलय वेहु ॥२७॥

सखी के वचन

॥ राग कान्हरौ ॥

नील लाल गौर के
ध्यान बैठे श्रीकुंजबिहारी ।
उयों-ज्यों सुख पावत नांही
त्यौं-त्यों दुख भयो भारी ॥
अरबराइ प्रगट भई जु
सुख भयो बहुत हिया री ।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा
कुंजबिहारी करि मनुहारी ॥२८॥

सखी के वचन

॥ राग कान्हरौ ॥

आजु की बानिक प्यारे तेरी प्यारी तुम्हारी
बरनी न जाइ छबि ।
इनकी स्यामता तुम्हारी गोरता
जेसे सित असित बेनी रही भुवंगम ज्यों दबि ॥
इनको पीतांबर तुम्हारो नील निचोल
ज्यों ससि कुंदन जेबरबि ।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी की सोभा
बरनी न जाय जो मिलें रसिक कोटि कबि ॥२१॥

सखी के वचन

॥ राग कान्हरौ ॥

देखि-देखि फूल भई ।
प्रेम के प्रकास प्रीति के आगे ह्व जु लई ॥
सुनि री सखी बागो बन्यो आज़ु
तुम पर त्रिन टूटत है जु नई ।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी सकल
गुन निपुन ताताथेई ताथेईगति जु ठई ॥३०॥

ऐसी तौ बिचित्र जोरी बनी ।
ऐसी कहूँ देखी सुनी न भनी ॥
मनही कनक सुदाह करि-करि
देह अद्भुत ठनी ।
श्रीहरिदास के स्वामी
स्यामा तमाले उठंगि बेठी धनी ॥३१॥

हंसत खेलत बोलत मिलत
देखो मेरी आँखिनसुत्र।
बीरी परस्पर लेत खवावत ज्यों दामिनि
घनचमचमात सोभा बहु भाँतिन सुख ॥
श्रुति घुरि राग केदारो जस्यो
अधराति निसा रोम-रोम।
श्रोहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी
के गावत सुर देत मोर भयो परम सुख ॥३२॥

अद्भुत गति उपजत अति
नृत्तत दोऊ मंडल कुंवर किसोरी ।
सकल सुधंग अंग भरि भोरी पियनृत्तत
मुसकनि सुख मोरी, परिरंभन रस रोरी ॥
ताल धरें बनिता मृदंग चन्द्रागति
घात बजे थोरी-थोरी ।
सप्त भाइ भाषा विचित्र
ललिता गाइनि चितचोरी ॥

श्रीवृन्दावन फूलनि फूल्यो पुरन ससि
त्रिविध पवन बहै थोरी-थोरी।
गति विलास रस हास परस्पर
भुतल अद्भुत जोरी ॥
श्रीजमुनाजल विथकित पुहुपनि वरष।
रति-पति डारत त्रिन तोरी।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी
को रस रसना कहै कोरी ॥३३॥

लालजू के वचन प्रियाजू तैं

राग केदारौ

प्यारी जु जब-जब देखों तेरो मुख
तब-तब नयो-नयौ लागत ।
ऐसो भ्रम होत में कबहुँ देखी न री
दुति को दुति लेखनि न कागत ॥
कोटि चन्द्र तें कहाँ दुराये री
नये-नये रागत।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कहत
काम की सांति न होइ
न होइ त्रिपति,रहों निस-दिन जागत ॥३४॥

राग केदारौ

ऐसी जिय होत जो जिय सों जिय मिले,
तन सों तन समाइ ल्यों, तो देखों कहा हो प्यारी ॥
तो ही सों हिलगि, आँखें आँखिन सों मिली रहें,
जीवन को यहै लहा हो प्यारो ॥
सोकों इतो साज कहाँ री प्यारी
हों अतिदीन तुब बस,
सुव छेप न जाय सहा हो प्यारी ।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कहत राखि ल री,
बाहु-बल हों बपुरा काम दहा हो प्यारी ॥३५॥

आजु रहसि में देखियत प्यारी जु,
एक बोल माँगोंजो लिखि देहु ।
साखी तेरे नेन दसन कच कुच
कटि नितंब जो लिखि देहु ॥
प्रीति द्रव्य रुचि ब्याज परस्पर
मन-वच-क्रम करि जो लिखि देहु ।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा प्यारी पे,
बोल बुलाय लियौ लिखि देहु ॥३६॥

लालजू के वचन प्रियाजू तैं

राग केदारौ

प्यारी तेरी बाँफनि बान सुमार लागें
भोहें ज्योंधनुष ।
एक ही बार यों छूटत
जसं बादर बरषत इंद्र अनख ।
और हथियार को गने
चाहनि कनख।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी सों
प्यारी जब तु बोलत चनख-चनख ॥।३७॥।

काहे ते आजु अटपटे से हरि।
अटपटी पाग अटपटे से बंद
अटपटी देत आगे सरि ॥
अटपटे पाँइ परत मैं परखे
जब आवत हे इत ढरि।
श्रीहरिदासके स्वामी स्यामा जानि हों पाये
आज लाल औरैं परि॥३८॥

काहे कौं मान करत, मोहिब कत दुख देत।
बासे की सी द्रष्टि लिये रहौं
तेरी जीवनि तोहि समेत ॥
अब कळु ऐसो करो जु भौंहनि
टाटी जिनि देहु कहत इत नेत ।
श्रीहरिदासके स्वामी स्यामा
छल के गर लगायो भई रमेत ॥३९॥

रोम रोम जो रसना होती
तऊ तेरे गुन न बखाने जात ।
कहा कहौं एक जीभ सखी री
बात की बात-बात ॥
भानु श्रमित और ससि हूँ
श्रमित भपे और जुवति जात ।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कहत री प्यारी
तु राखत प्रांन जात ॥४०॥

तुब जस कोटि ब्रह्मांड विराजै राधे।
श्री सोभा बरनी न जाइ अगाधे ॥
बहु तक जनम विचारत ही गये साधे-साधे ।
श्रीहरिदास के स्वामीस्यामा कहत री प्यारी
ए दिन मैं क्रम-क्रम करि लाधे ॥४१॥

सखी के वचन

राग केदारौ

फूलों सब सखी देखि-देखि ।
जच्छ किन्नर नागलोक देवस्त्री
रीझि रहीं भुव लेखि-लेखि॥
कहत परस्पर नारि नारि सों
यह सुंदर्यता अवरेखि-रेखि ।
श्रीहरिदास के स्वामीस्यामा
ए केसे हूँ चितयें परेखि-रेखि ॥४२॥

सखी के वचन प्रियाजू तैं

राग केदारौ

पिय सों तु जोई-जोई करं सोई छाजे ।
ओर सेंघ करे जो तेरी सोई लाजे ॥
तु सुर-ग्यान सब अंग सखी री
माँन करत बे-क़ाजे।
श्रीहरिदास के स्वामीस्याम
जिय में बसे तू नित्त नित्त बिराजै ॥४३॥

सोई तौ वचन मोसौं मानि,
तें मेरो लाल मोह्यो री साँवरो ।
नव निकुंज सुख पुंज महल में,
सुबस बसौ यह गाँबरो ॥
नव-नव लाड लड़ाइ लाडली,
नहि-नहि यह ब्रज जाँवरो ।
श्रीहरिदास के स्वामी-स्यामा कुंजबिहारी पे
वारोंगी मालती भाँवरो ॥४४॥

प्रियाजू ते सखी के वचन

राग केदारौ

जो कडु कहत लाड़िलो
लाड़लीज सुनिये काँनदे।
जो जिय उपजे सो तिहारेई
हित की कहति होंआँन दे ॥
मोहि न पत्याहु तो छाती
टकटोरि देखोपान दे ।
श्रीहरिदास के स्वामीस्यामा कुंजबिहारी
जाचक कों दान दे ॥४५॥

प्यारीजु आगे चलि आगे चलि
गहबर बन भीतरजहाँ बोले कोइल री ।
अति ही विचित्र फूल पत्रन कीं सेज्या रची
रुचिर सवारी तहाँ तूब सोइल री ॥
छिन-छित पल-पल तेरीये कहानी
तुब मग जोइल री।
श्रोहरिदास के स्वामीस्याम कहत
छबीलो काँम-रस भोइल री ॥४६॥

प्यारी अब सोइ गई ।
ज्यों-ज्यों जगावत त्यों-त्यों नहि जागत,
प्रेम रस पान करि भोइ गई ॥
जागत होइ तों जगाऊं प्यारी तातेंब परम सचु,
रस ही रसिक रस बोइ गई ।
श्रीहरिदास के स्वामीस्यासा उठिक गरे लगाई,
नवल प्रीति सों नोड गई ॥।४७॥।

सखीन के परस्पर के वचन

राग केदारौ

डोल झूलत दुलहिनी दुलहु ।
उडत अबीर कुम-कुमा छिरकत
खेल परस्पर सुलहु॥
बाजत ताल रबाब और बहु
तरनी तनया कूलहु ।
श्रीहरिदास के स्वामीस्यांमा कुंजबिहारी को
अनतब नाँहिने फूलहु ॥४८॥

लालजू तैं सखी के वचन

राग केदारौ

प्यारी पहिरें चूनरी ।
तेसोई लहँगा बन्यो सिल-सिलो
पुरनमासी की सों पुनरीं ॥
हों जु कहत चलिये मनमोहन
मानेंगी नहि घुनरी ।
श्रीहरिदास के स्वामीस्यामा
कुंजबिहारी चरन लपटाने दुहुन री
॥४९॥

बनी री तेरे चारि-चारि चूरी करन।
कंठसिरी दुलंरी हीरनि की
नासा मुक्ता ढरनि ॥
तेसौई ननकजरा फबि रह्यो
निरखि काम डरनि।
श्रीहरिदास हैके स्वामीस्यामा
कुंजबिहारी रीझि-रीझि पग परनि ॥५०॥

प्यारी अब क्यों हूँ क्यों हूँ आई है।
इत तुम श्रसित अधिक मनमोहन
मैं कोटि जतन समझाई है॥
उत हठ करति बहुत नवनागरि
तेसोये नई ठकुराई है ।
श्रीहरिदास के स्वामीस्याम कर जोरि मोन ह्वे
दूबरे की राँधी खीर कहो कोने खाई है ॥५१॥

सुनि धुनि मुरली बन बाजे हरि रास रच्यो।
कुंज-कुंज द्रूम बेली प्रफुल्लित
मंडल कंचन मनिन खच्यौ ॥
नृत्तत जुगलकिसोर जुवतिजन
मन मिलि राग केदारौ मच्यो ।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी नीके
री आजु प्यारो लाल नच्यो
॥५२।

लालजू के वचन प्रियाजू तैं

राग कल्याण

जहाँ-जहाँ चरन परत प्यारी जू तेरे
तहाँ-तहाँ सन मेरौ करत फिरत परछाँहीं ।
बहुत सुरति मेरी चेंबर दुरावति
कोऊ बीरी खवावति एकब आरसी ले जाँही।
और सेवा बहु भाँतिन की जेसीये कहैं कोऊ
तेसीयकरों ज्यों रुचि जानों जाँहीं ।
श्रीहरिदास के स्वामीस्यामा कों
भले मनावत दाइ उपाँहीं ॥५३॥

यह कौन बात जु अबही और
अबही और अबही और ।
देवनारि नाग नारि और नारि तें
न होहि और को ओरं॥
पाछे न सुनी अबहूं आगें हुँ न है है यहगति
अद्भुत रूप को और को औरे।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी
या रस हो बस भये यह भई और को और ॥५८॥

सखी सौं सखी के वचन

राग कल्याण

माई ये बसीठ इनके ये इनके
और धों कोपरे बीच ।
हाथापाई करत जु श्रम भयो
अंग अरगजाकी कीच ॥
प्यारीजू के मुख अंबुज को डहडहाट
ऐसो लागत ज्यों अधरामृत को सोंच ।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी के
राग रंग लटपटानि के भेद न्यारे न्यारे
जस पानी में पानी नरीच ॥५५॥

सखी सौं सखी के वचन

राग कल्याण

कस्तुरी को मर्दन अंग में किये
मुरली धरें पीताम्बर ओढे कहत राधे हों ही स्याम ।
किसोर कुमकुम को सिंगार किये
सारी चुरी खुभी नेत्रनि दिये स्याम ॥
बाँह गहि ले चले चलिये जु कुंज में
चिते मुख हंसे मानों एई स्याम ।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी
छाती सों छाती लगायें गौर-स्याम ॥५६॥

प्यारी तेरो वदन चंद देखें
मेरे हृदे सरोवर तें कमोदिनी फूली।
मन के मनोरथ तरंग अपार
सुंदर्यता तहाँ गति भूली ॥
तेरो कोप ग्राह ग्रसें लिये जात
छुड़ायो न छूटत रहौ बुधि बल झूली ।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा चरन बंसी सों
काहि रहे लटपटाइ गहि भुजमूली ॥५७॥

प्यारी तेरो वदन कनक कोकनद
श्रम जल कन सोभा देत री।
तामें तिल द्रष्टि परत ही
मन हरिलेत री ॥
उर तन जाति पाँति प्राननि कों
कटि सों करि संकेत री।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा
कुंजबिहारी कहत अचेत री ॥५८॥

बचन दै मान न करौं ।
मन-बच-क्रम तीन हूँ तेंन टरौं ॥
तेरे ही किये मान व्याप होत तन
कहि कैसें के भरो ।
श्रीहरिदास के स्वामीस्यामा कुंजबिहारी
कहत री प्यारी कैसें के लरौं
॥५९॥

कुंजबिहारी नाचत नीके
लाडली नचावत नीके ।
औघर ताल धरें श्रीस्यामा
ताताथेई ताताथेई बोलत संग पीके ।
तांडव-लास और अंग को गनें जे-जे
रुचि उपजति जी के ।
श्रीहरिदास के स्वामीस्यामा कौ मेरु सरस
भयौ और रस गुनी परे फीके ।।६०॥

डोल झूलत बिहारी बिहारिनि राग रमि रहो ।
काहू के हाथ अधोटी काहू के बीन
काहू के मृदंग कोऊ गहुँ तार
काहू के अंरगजा छिरकत रंग रह्यो।
डाँडी छांडे खेल बढ्यो जु परस्पर
नहिं जानियंत पग क्यों रह्यो ।
श्रीहरिदास के स्वामीस्यामा कुंजबिहारी को
खेल खेलत काहू न लह्यो ॥६१॥

हमारो दान मारयो इनि ।
रातनि बेचि-बेचि जात घेरो सखा
जान ज्यों न पावे छियो जिनि॥
देखो हरि के ऊज उठाइबे की बात राति-विराति
बहूटी काहू को निकसति हैं पुनि।
श्रीहरिदास के स्वामी की प्रकृति न फिरी
छिया छाँड़ो किनि ॥
॥ ६२॥

प्रियाजू सौं सखी के वचन

राग कल्याण

गुन रूप भरी बिधिना सवारी
दुहुँ कर कंकन एक एक सोहै।
छूटे बार गरे पोति दिपति मुख की जोति
देखि-देखि रीझ तोहि प्रानपति
नेंन सलोनी मन मोहे ॥
सब संखि निरखि थकित भई आली
ज्यों-ज्यों प्रानप्यारो तेरो मुख जोहै।
रस-बस करिलीने श्रीहरिदास के स्वामीस्यामा
तेरी उपमा कोंकहि धौं को है ॥६३॥

अजहू तु कहा कहेति है री मार नेन आरनि।
भोहें ज्यों धनुष चितवनि बान
बाँफिंन फौंक धरें कहत स्याम प्यारनि॥
तु ही जीवनि तू ही भूषनि
तु ही प्रान-धन धरनि ।
श्रीहरिदास के स्वामीस्यामा कुंजबिहारीसों
मेरू भयो बिहारिनि ॥६४॥

प्यारी जु गुननि राइ सिरमोर ।
गति में गति उपजति नाना
राग रागिनी तार मंद्र सुर घोर ॥
काहू कछू लियो रेख छाया,
तौ कहा भयो झूठी दौर ।
कहें श्रीहरिदास लेत प्यारीज् के तिरप
लागनि में किसोर ॥६५॥

प्यारी तोपे कितोक संग्रह छबिन को,
अंग-अंग प्रति नाना भाइ दिखावति।
हाथ किन्नरी मध्य सचु पाइ सुलप राग
रागिनी सौं तु मिलि गावति ॥
कहाकहां एक जीभ गुन अगनित,
हारि परयो कछु कहत न आवति।
श्रीहरिदास के स्वामीस्यामा
कहत रीप्यारी तु जे-जे भाइ ल्यावति ॥६६॥

परस्पर राग जम्यो समेत
किन्नरी सृदंग सुरतार।
तीन हूँ सुरन के तान बंधान
धुर-धुरपद अपार ॥
बिरस लेत धीरज न रह्यो
तिरप लाग डाट सुरसोरनि सार ।
श्रीहरिदास के स्वासीस्यामा जे-जे अंगको गति लेति
अति निपुन अंग-अंग-अहार ॥६७॥

तोकों पिय बोलत हैं री लाल ठाढ़े कदंब तर।
अबक ऐसौ ज्यो किये कहा होत है री
मारि कही कुसुम-सर ॥
कुंजबिहारी अपनो अंस
तासों क्यों कीजे छदम वर ।
श्रीहरिदास के स्वामीस्यासा ढूँढ़त बन में
पाई क्रम-क्रम कर विषम डर ॥६८॥

प्रियाजू सौं सखी के वचन

राग सारंग

चलिये छबीली छबीलौ बोलत ।
आजु की बानिक पर त्रन टूटत है
कही न जाय कछु स्याम तोहि रत ।
सखी ले चली मनाय
ज्यों हित की आईघत ।
श्रीहरिदास के स्वामीस्यासा बीच ही आइ मिले
तन की सुबास सकल भँवर कलमलत ॥।६९।।

बेनी गूँथि कहा कोऊ जानें
मेरी सी तेरी सौं।
बिच-बिच फूल सेत पीत राते
को करि सके एरी सौं ॥
बेठे रसिक संवारन बारन कोमल कर ककहीसों।
श्रीहरिदास के स्वामीस्यासा नख-सिख लों बनाई
दे काजर नख ही सौं ॥७०॥

प्यारी तेरी पुतरी काजर हूँ तें कारी,
मानों द्वै भंवर उड़े री बराबरि ।
चंपे की डार बैठे कुंद अलि
लागी है जेब अरा-अरि ॥
जब आनि घेरत कटक काम कों,
तब जिय होत डरा-डरि ।
श्रीहरिदास के स्वामी-स्यामा कुंजबिहारी
दोउ मिलि लरत झराझरि ॥७१॥

स्यामकिसोर जु तुमकों दोऊ
रंग रंगित पीतांबर चूनरी ।
ऐसो रूप कहाँ तुम पायौ,
अहरनिस सोच उधेर-बूनरी ॥
मनमोहन सुर ज्ञान सिरोमनि
सब अंगनि अंग कोक निपुनरी ।
श्रीहरिदास के स्वामी-स्यामा तुम्हारी विचित्रताई प्रेम
सों पाईयत रस सुनरी ॥७२॥

चौकी कहां बदलि परी हो प्यारे हरि।
लालपाट की हुती जंगाली ल्याये बरि॥
बह तो हुती हीरनि खचित पे यह दुरंग पन्ना
लालह मिलि लहों लरि ।
श्रीहरिदास के स्वामीस्यामा कुंजबिहारी
की चतुराई रही भरि ॥७३॥

आउ लाल ऐसें मद पीजे,
तेरो झगा मेरी अँगिया धरि ।
कुच को सुराही नैंननि के प्याले,
दारूदयौंगी यों अंकों भरि ॥
अधरनि चुबाइ लेउ सब रस
तनिकौ न जान देउ इत उत ढरि।
श्रीहरिदास के स्वामीस्यामा कुंजबिहारी की
सुहबति असर जहाँ आपुन हरि ॥७४॥

डोल झूलत बिहारी बिहारिनि पुहुप वृष्टि होति ।
सुर-पुर पुर गंधर्व और पुर तिनकी नारि देखति
वारति लर मोति ।
घेरा करति परस्पर सब मिलि
कहूँ न देखी ऐसी जुवती जोति।
श्रीहरिदास के स्वामीस्यामा कुंजबिहारिनि
सादा चुरी खुभी पोति
॥७५॥

प्यारीज़ू बोलत नाहीं के तु सुता उनींदी,
किधों काहू कछु कह्यो के तेरो ऐसोई सुभाव ।
सोह तेरे देखे बिन कल न परे
के तु छाँडि कुभाव॥
काहू की झुक हमें देति री, उपजत दुभाव ।
श्रीहरिदास के स्वामीस्यामा कहत
ताके बस परे प्रगटत जु भाव ॥७६॥

आलस भींजे री नेंन जंभाति,
आछी भांति सुदेस।
कर सों कर टेक अँगुरिन पेंच मानों ससि
मंडल बेठ्यो अति भांति सुदेस ॥
मन के हरिबे कों और सुख नाहिने कोऊ
प्यारी नख-सिख भाँति सुदेस ।
श्रीहरिदास के स्वामीस्यामा कुंजबिहारी
छाती सौं छाती लगाय अंग-अंग सुदेस ॥७७॥।

प्यारीजू एक बात को मोहि डर आवत है
मति कबहुँ कुमया करि जाति।
पल पल हित बंछत हौँ री, मति परे भांति॥
यह सचु ऐसेई रहो री, जिनि टरो तेरी घाति।
श्रीहरिदास के स्वामीस्याम कहत
यों बाढ़ौ ज्यों पुरइनि जल की रीति
तोहि लौं सांति ॥७८॥

लालजू के वचन

राग विभास

प्यारीजू हम तुम दोऊ एक कुंज के सखा
रूठें क्यों बनें ।
इहां कोउ हितू मेरो न तेरो
जो यह पौर जने ॥
हों तेरौ बसीठ तु मेरौ
और न बीच सने ।
श्रीहरिदास के स्वामीस्यामा कुंजबिहारी
कहत प्रीति पने ॥७१॥

चूनरी में जाड़ो लागत है री
कीजिये सुख सेन ।
घरी घरी कें रूसनें पहर मनावत जात
मीठे मीठे बेन ॥
उठि सदके बलाइ लेउँ
प्रकृति यों न चाहिये, चाहिये ज्यों मैन ।
श्रीहरिदास के स्वामीस्यामा कुंजबिहारी
लपटाइ रहे मानि सबे सुख चेत ॥८०॥

दुहुन की सहज बिसाँति
दोऊ मिलि सतरंज खेलत।
उर रुख नेन चपल अस्व
चतुर बराबर झेलत ॥
आतुरता फील पयादे निग्रह
फरजी चौंप अनुपम पेलत ।
श्रीहरिदास के स्वामीस्यामा कुंज-बिहारी
सह साह राखें खेलत ॥८१॥

होड परी मोरनि अरु स्यामहिं ।
आवहु मिलहु मध्य सचु की गति
लोहे रंग धों कामहिं ।
हमारे तुम्हारे मध्यस्थ राधे
और जाहि बदौ बूझि देखो
त्रिन दे कहा है यामहिं ।
श्रीहरिदास के स्वामो को चौपर कौ सो खेल
इकगुन दुगुन त्रिगुत चतुरगुन री जाके नामहिं ॥८२॥

प्रियाजू के वचन अपने मन ते 					राग विभास

कहौ यह का की बेटी कहौ धों
कहा है कुंवरि को नाँउ।
तुम सब रहो री हों ऊत्तर दे हों
चले किन जाहु ढोटा बाइ बावरो गाँउ ॥
सब सखि मिलि छिरका जु खेलन लागीं
तोलों तुम रहो री जोलों हों न्हाँउ ।
श्रीहरिदास के स्वामोस्यामा कुंजबिहारी
ले बुड़की गरें लागि चौंकि परी कहाँ हों जाँउ ॥८३॥

सखी सौं सखी के वचन

राग विभास

एक समे एकांत बन में
डोल झूलत कुंजबिहारी ।
झोटा देत परस्पर सब मिलि
अबीर उड़ावत डारी ॥
कबहुँक वे उनके वे उनके
हों दुहुनि की एक सारी ।
श्रीहरिदास के स्वामीस्यामा
कुंजबिहारी बाढ्यो रंग भारी ॥८४॥

सखी सौं सखी के वचन

राग विभास

कुंज-कुंज डोलनि मृदु बोलनि
टूटी लर छूटी पोति अति छबि लागत ।
भंवर गुंजार करत संग डोलत,
मानों मेरु रागिनी के संग लियें रागत ॥
जूथ अनेक सुघर जुवतिन के
तुम्हारी रीझि पलब नहि लागत ।
श्रीहरिदास के स्वामीस्यामा कुंजबिहारी पर
तन-मन-धन न्यौछावर करों कागति ॥८५॥

प्रातः सखी के वचन

राग बिलावल

प्रिया पिय के उठिबे की छबि,
बरनी न जाय सब ते न्यारे ।
मानों घोस रेत इक ठौरे सोये, न भये न्यारे ॥
बार लटपटे मानों भँवर जथ लरत परस्पर,
कमल-दलनि पर खंजरीट सोभा न्यारे ।
श्रीहरिदासके स्वामीस्यामा कुंजबिहारी बिहारिन
पर कोटि-कोटि अनंग कोटि
ब्रह्मांड वारि किये न्यारे ॥८६॥

प्रातः सखी के वचन

राग बिलावल

स्यामा-स्याम आवत कुंजसहल तें
रगमगे-रगमगे ।
मरगजी बनमाल सिथिल कटि किकिनी अरुन
नेन चारों जाम जगे ॥
सब सखी सुघराई गावत बीन बजावत
सब सुख मिलि संगीत पगे।
श्रीहरिदास के स्वामीस्यामा कुंजबिहारी की
कटाछ सों कोटि काम दगे ॥८७॥

हिडोरैंब झूलत लाल दिन दुलहु
दुलहिनि बिहारिनि देखो री ललना ।
गौर-स्याम छबि अति दुति
बहु भाँति री बलना ॥
नीलांबर पीतांबर अंचल चलत
धुजा फहराति कलना ।
श्रीहरिदास के स्वामी-स्यामा
कुंजबिहारी बिहारिनि अबिचलना ॥८८॥

ऐसी रितु सदा सर्वदा
जो रहे बोलति मोरनि।
नीके बादर, नीके धनुष, चहुँ दिसि नीको श्रीवृंदावन
आछी नीकी मेघनि की घोरनि ॥
आछी नीकी भूमि हरी-हरी आछी नीकी,
बूढ़नि की रेंगनि काम किरोरनि।
श्रीहरिदास के स्वामी-स्यामा के मिलि गावत
राग मलार जम्यो किसोर-किसोरनि ॥८९॥

सु बोल बोलिपे जु मान न करिहौं,
आये दिन पावस के सचु के
घरी-घरी के रूसनें क्यों बनें
ते बोल बोलिये जु मन-क्रम-वच के ॥
भयो है बधान बहुत जतननि करि
बिसरे गुन गस के।
श्रीहरिदास के स्वामी-स्यामा
कुंजबिहारी प्यारी बस के ॥९०॥

यह अचरज देख्यो न सुन्यो कहूँ
नवीन मेंघ संग बीजुरी एक रस ।
तामें मौज उठत अधिक, बहु भाँतिलस ॥
मन के देखिवे कों और सुख नांहिने
चितवत चितहिं करत बस ।
श्रीहरिदास के स्वामीस्यामा कुंजबिहारी
बिहारिनि जु को पवित्र जस ॥९१॥

बूँदें सुहावनी री लागति मति
भोजे तेरी चूँनरी ।
मोहि दे उतारि धरि राखौं, बगल में तु न री।
लागि लपटाइ रहें छाती सौं छाती
जो न आवे तोहि बौछार की फूनरी ।
श्रीहरिदास के स्वामीस्याम कहत
बीजुरी कोंधे, करि हाँ, हूँ न री ॥९२॥

भींजन लागे री दोऊ जन।
अचरा की ओट करत दोऊ जन ॥
अति उन्मत्त रहत निसि-बासर
राग ही रंग रंगे दोऊ जन ।
श्रीहरिदास के स्वामीस्यामा कुंजबिहारी,
प्रेम परस्पर नृत्य करत दोऊ जन॥९३॥

नदित मन मृदंगी रास भूमि सुकांति
अभिने सु नव गति त्रिभंगी ।
धापि राधा नटति ललिता रसवती नागरी
गाइतेग्रिनाभि तान तुंगी ॥
रसद बिहारी बंदे बल्लभा राधिका
निसि-दिन रंग रंगी ।
श्रीहरिदास के स्वामीस्यामा
कुंजबिहारी संगीत संगी ॥१४॥

दाँमिनि कहत मेघ सों हमारी उपमा देहीं ते झूठें
एई मेघ बीजुरी साँची ।
जिन-जिन हमारी उपमा दीनी,
तिन-तिन की सति काँची ॥
ऐसी कहूँ सुनी जु बूँद तें कन न्यारी,
ता पटतर क्यों दीजे समुद्र राँची ।
श्रीहरिदास के स्वामीस्यामा कुंजबिहारी की
अटल-अटल प्रीति माँची ॥९५॥

सखी सौं सखी के वचन

राग गौड़ मलार

नाँचत मोरनी संग श्याम, मुदित श्यामहिं रिझावत ।
तेसीये कोकिला अलापत पपीहा देत सुर
तैसीये मेघ गरजि मृदंग बजावत ॥
तेसीये स्याम घटा निसि सी कारी
तैसीये दाँमिनि कोंधि दीप दिखाबत।
श्रीहरिदास के स्वामीस्यामा कुंजबिहारी
रीझि राधे हसि कंठ लगावत ॥९६॥

सखी के वचन प्रियाजू सौं

राग गौड़ मलार

हरि के अंग कौ चंदन लपटानौं
तेरे देखियत जेसैं पीत चोली ।
मरगजे अभरन वदन छिपावति
छिपे न छिपायें मानौं कृष्ण बोली ॥
कहुँ अंजन कहुँ अलक रही खसि,
सुरति रंग की पोटे खोलो।
श्रीहरिदास के स्वामीस्याम मिलत बिहारिनि
हार न रह्यो कंठ बिच ओली ॥९७॥

कुच गडुवा जोबन मोर,
कंचुकी बसन ढाँपि ले राख्यो बसंत ।
गुन मंदिर रूप बगीचा में बेठी हैं, मुख लसंत॥
कोटि काम लावन्य बिहारी,
जाहि देखत सब दुख नसंत।
ऐसे रसिक श्रीहरिदास के स्वामी
तिनकों भरन आई मिलि हसंत ॥९८॥

सखी के वचन

राग बसंत

कुंजबिहारी को बसंत सखि
चलहु न देखनजाहु ।
नव बन नव निकुंज नव पल्लव
नव जुवतिन मिलि माहि ॥
बंसी सरस मधुर धुनि सुनियत
फूलीअंग न माहि ।
सुनि श्रीहरिदास प्रेम सों प्रेमहिं
छिरकत छल छुवाँहि ॥११॥

चलि री भीर तें न्यारेई खेलें ।
कुंज-निकंज मंजु में झेलें ॥
पंछिन सहित सखी न संग कोऊ,
तिहि बन चलि मिलि केले ।
श्रीहरिदास के स्वामीस्यामा
प्रेम परस्पर बूका बंदन मेले ॥१००॥

अबके बसंत न्यारेई खेले,
काहू सों मिलि न खेलेई तेरी सों ।
दुचिते भये कछ न सचु पाइयत
तु काहू सखी सों मिलि न, मेरी सों ॥
देखेगी जु रंग उपजेगो
राग रागिनी के फेरा-फेरी सों।
श्रीहरिदास के स्वामीस्यामा कुंजबिहारी
राग ही में रंग उपजेंगौ एरी सों॥१०१॥

रहो रहो बिहारी जु, मेरी आंखिन में बका मेलत हो
कित अंतर होत मुख अवलोकन कौं।
और भाँवती तिहारी मिल्यो चाहत सिसि के
पैयाँ लागों पन-पन कों ॥
गावत खेलत जो सुख उपजत
सु तौ कोटि वर है तन कों।
श्रीहरिदास के स्वामी कौ मिलत खेलत को सुख,
कहाँ पाइयत ऐसो सुख मन कों ॥१०२॥

सांधे न्हाइ बैठी पहिरि पट सुंदरि
जहाँ फुलवारी तहाँ सुखबति अलकें।
कर नख सोभा कल केस सँबारति,
मानौं नव घन में उडगन झलकैं ॥
विविध सिंगार लिये आगे ठाढ़ी प्रिय सखी,
भयौ भरुआनि रतिपति दल दलके ।
श्रीहरिदास के स्वामीस्यामाकुंजबिहारी की छबि
निरखत लागत नाहीं पलक॥१०३॥

सखी की बोलनी

राग गौरी

चलौ सखी कुंजबिहारी सौं मिलि,
चित दे देखे उनकी भाँवती ।
सुंदर सों सुंदरि मिलि खेलत, कैसैं धों गाँबती ॥
औचक आइ परी सखी,
तहाँ पिय पै पाँइ चंपावती ।
श्रीहरिदास के स्वासीस्यामा कुंज-बिहारी सों
मिलि पोढ़ी तन-मन राँवती ॥ १०४

सखी सौं सखी के वचन

राग गौरी

राधा-रसिक कुंजबिहारी खेलत फाग,
संब जुवती जन कहत हो हो होरी ।
भरत परस्पर काहू की काहू न सुधि,
हँसिकें मन हरत मोहन गोरी॥
कर सों करब जोरि, कटि सों कटिब मोरि
करत नृत्य काहू न रुचि थोरी ।
श्रीहरिदास के स्वामीस्यामा
फिरत न्यारेई न्यारे सब सखियनं कौ
दृष्टि बचावत तकि तब खोरी ॥१०५।।

नव निकुंजगृह नवल आगे
नवल बीना मध्य राग गोरी ठटी ।
मनो दस इंदु पीयूष वरषत सुखद
चपल करजावली दृष्टि पिय को जटी ॥
रीझि रीझि पिय देत भूषन बसन दाम उर
रसन दसननि धरत निरखि सारंग कटी ।
रसद श्रीहरिदास बिहारी अंग-अंग मिलत,
अतन उदोत करत सुरति आरंभटी ॥१०६॥

झूलत डोल दोऊ जन ठाढ़े ।
हाँगत जोर सहित जसों,
जाके डाँडोब गहें गाढ़े ।।
बिच-बिच प्रीति रहसि रस रीति की,
राग रागिनीन के जूथ बाढ़े।
श्रीहरिदास के स्वामीस्यामा कुंजबिहारी
राग ही के रंग रंगि काढ़े ॥ १०७॥

झूलत डोल श्रीकूंजबिहारी ।
दूसरी ओर रसिक राधावर,
नागरि नवल दुलारी ॥
राखे न रहत हंसत कहि-कहि प्रिया,
बिलबिलात पिय भारी ।
श्रीहरिदास के स्वामीस्याम कहत री प्यारी,
अबकें राखि हा हा री
॥१०८॥

प्रियाजू सौं लालजू के वचन

राग नट

कोन प्रकृति तिहारी छिया
तुमहिं मिलत बेगि भोर ह्वै जात ।
अथवत निमेष होइ पह फाटी,
देखियत पहिली सह मात ह्वै जात ॥
आवत जात भारो परे, पीतौ मरि जात।
श्रीहरिदास के स्वामी तुम्हारे माथैं
तृण कितौक सुख जात
॥१०९॥

सखी सौं सखी के वचन

राग नट

जुग कवनी बेस किसोर दोऊ
निकसि ठाढ़ भये सघन बन तें ।
तन-तन में बसत मन-मन में लसत
सोभा बाढ़ी दुहुँ दिसि,
मानों प्रगट भई दामिनि घन-घन तें ॥
सोहन गहर गंभीर बदत, पिक बानी उपजत
मानों प्रिया के वचन तें।
श्रीहरिदास के स्वामीस्यामा कुंजबिहारी,
ऐसौ को जाको मन लागे अन तें॥११०॥

॥श्री स्वामी हरिदास की वाणी फल को स्वाद॥
॥तासु बंश खग पाश रस उपजत उर आह्लाद॥

नमो नमो श्रीहरिदास वृंदाविपिन-वास,
वर प्रान सर्वसु वाँकेविहारी।
स्यामा-स्याम जुगल रूप-माधुर्य के,
रसिक रिझवार प्रेम-अवतारी।।
परम वैराग्य-निधि बसत निधिवन सदा,
भावनालीन सुप्रवीन भारी।
कामना कल्पतरु सकल संताप हरु,
'अग्रदास अलि' कल्याणकारी ।।

- स्वामी श्रीअग्रदासजी महाराज